

---

# VaishampayanaproktaM Narayana Stotram

---

## वैशम्पायनप्रोक्तं नारायणस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : VaishampayanaproktaM Narayana Stotram

File name : vaishampAyanaproktaMnArAyaNastotram.itx

Category : vishhnu, vishnu, mahAbhArata, stotra

Location : doc\_vishhnu

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : mahAbhArata | shAntiparva | adhyAya 334/13-17||

Latest update : November 15, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 15, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

वैशम्पायनप्रोक्तं नारायणस्तोत्रम्



स हि परमगुरुर्भुवनपतिर्धरणिधरः शमनियमनिधिः ।  
श्रुतिविनयनिधिर्द्विजपरमहितस्तव भवतु गतिर्हरिरमरहितः ॥ १३ ॥  
तपसां निधिः सुमहतां महतो यशसश्च भाजनमरिष्टकहा ।  
एकान्तिनां शरणदोऽभयदो गतिदोऽस्तु वः स मखभागहरः ॥ १४ ॥  
त्रिगुणातिगश्चतुष्पञ्चधरः पूर्तेष्टयोश्च फलभागहरः ।  
विद्धाति नित्यमजितोऽतिबलो गतिमात्मगां सुकृतिनामृषीणाम् ॥ १५ ॥  
तं लोकसाक्षिणमजं पुरुषं रविवर्णमीश्वरगतिं बहुशः ।  
प्रणमध्वमेकमतयो यतयः सलिलोद्भवोऽपि तमृषिं प्रणतः ॥ १६ ॥  
स हि लोकयोनिर्मृतस्य पदं सूक्ष्मं पुराणमचलं परमम् ।  
तत्साङ्ख्ययोगिभिरुदारधृतं बुद्ध्या यतात्मभिर्विदितं सततम् ॥ १७ ॥  
इति महाभारते शान्तिपर्वणि ३३४ अध्यायान्तर्गतं  
वैशम्पायनप्रोक्तं नारायणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।  
महाभारत । शान्तिपर्व । अध्याय ३३४/१३-१७ ॥

mahAbhArata . shAntiparva . adhyAya 334/13-17..

Proofread by PSA Easwaran

